अग्निहोत्र

प्रस्तुत ग्रंथकी भूमिका

आगामी सैकडों पीढियोंके लिए उपयुक्त सनातनकी ग्रन्थमाला 'भावी संकटकालकी संजीवनी' !

'पूर्व कालमें जब व्यक्ति विकारग्रस्त होता था, तब दादीजी जैसे घरके बडे और अनुभवी लोग घरपर ही औषधोपचार करते थे । इस कारण रोगीको हर बार वैद्यके पास नहीं जाना पडता था । औषधोपचारकी यह पद्धति 'दादीमांका बटुआ' कहलाती थी । यह सरल-सहज और पारंपारिक पद्धति आज लुप्त हो चली है । इस कारण आज थोडी भी अस्वस्थता होती है, तो व्यक्ति वैद्यके पास जाता है । सनातनके 'आगामी संकटकालकी संजीवनी' ग्रन्थमालाके विविध ग्रन्थोंका उपयोग कर, अब घरपर भी बिना किसी दुष्परिणामके सुलभतासे उपचार किए जा सकते हैं । ये सभी उपचारपद्धतियां आगामी सैकडों पीढियोंके लिए भी उपयुक्त सिद्ध होंगी । 'ये उपचार श्रद्धापूर्वक करनेकी सुबुद्धी सभीको हो और उसके लिए सनातनके ये ग्रंथ घर-घरमें उपलब्ध हों', यह ईश्वरके चरणोंमें प्रार्थना है !' - (परात्पर गुरु) पांडे महाराज, सनातन आश्रम, देवद, पनवेल. (३.१२.२०१७)

त्रिकालज्ञानी संतोंने कहा है कि आगामी भीषण संकटकालमें संपूर्ण विश्वकी प्रचंड जनसंख्या नष्ट होगी । वास्तवमें अब संकटकाल आरंभ हो चुका है । संकटकालमें तीसरा महायुद्ध भडक उठेगा । द्वितीय महायुद्धकी अपेक्षा वर्तमानमें विश्वके लगभग सभी राष्ट्रोंके पास महासंहारक आण्विक अस्त्र हैं । ऐसेमें वे एक-दूसरेके विरुद्ध प्रयुक्त किए जाएंगे । इस युद्धमें सुरक्षित रहना हो, तो उसके लिए आण्विक अस्त्रोंको निष्क्रिय करनेके प्रभावी उपाय करने चाहिए । इन आण्विक अस्त्रोंसे निर्गमित किरणोंको नष्ट करनेके लिए भी उपाय चाहिए । इसमें स्थूल उपाय उपयोगी सिद्ध नहीं होंगे; क्योंकि बमकी तुलनामें अणुबम सूक्ष्म है । स्थूल (उदा. बाण मारकर शत्रुका नाश करना), स्थूल और सूक्ष्म (उदा. मंत्रका उच्चारण कर बाण मारना), सूक्ष्मतर (उदा. केवल मंत्र बोलना) एवं

सूक्ष्मतम (उदा. संतोंका संकल्प), इस प्रकारके उत्तरोत्तर प्रभावी चरण होते हैं । स्थूलकी अपेक्षा सूक्ष्म अनेक गुना अधिक प्रभावशाली है । इस कारण, अणुबम जैसे प्रभावी संहारकके किरणोत्सर्गको रोकनेके लिए सूक्ष्म दृष्टिसे कुछ करना आवश्यक है । इसलिए ऋषि-मुनियोंने यज्ञके प्रथमावतारूपी 'अग्निहोत्र'का उपाय बताया है । यह करनेमें अति सरल तथा अत्यल्प समयमें संपन्न होनेवाला; किंतु प्रभावी रूपसे सूक्ष्म परिणाम साधनेमें सहायक उपाय है । इससे वातावरण चैतन्यमय बनता है तथा हमारे सर्व ओर सुरक्षा-कवच भी निर्मित होता है । सामान्यजन यदि इतना भी करें तो पर्याप्त है । इससे भी अधिक प्रभावी अर्थात सूक्ष्म उपाय है साधना करना । साधनासे आत्मबल प्राप्त होता है एवं अपने कार्यको बल मिलता है । सामान्य व्यक्तिको अग्निहोत्र करनेसे जो लाभ होगा, वही लाभ साधना करनेवाले तथा ६० प्रतिशत आध्यात्मिक दृष्टिसे प्रगत साधकको प्रार्थनामात्रसे साध्य होता है ।

अग्निहोत्रका महत्त्व, उसे करनेकी पद्धति और उसका सूक्ष्म परिणाम समझानेवाला यह कल्याणकारी ग्रंथ प्रस्तुत कर रहे हैं । श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि इसके अभ्याससे अग्निहोत्र तथा साधनाका महत्त्व सामान्यजनोंको ज्ञात हो तथा वे उसे अपने आचरणमें ला पाए । **- संकलनकर्ता**

अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण विषय '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

१. तृतीय महायुद्धकी भीषणता तथा उसपर उपाय २८

२. साधकोंके साथ ही सामान्य जनताके प्राण बचाने हेतु परात्पर गुरु डॉक्टरजीद्वारा सुझाए गए उपाय २८

* अणुयुद्धसे उत्पन्न प्रदूषणसे संरक्षणके उपाय २८

३. अग्निहोत्र २९

३ अ. अग्निका महत्त्व ३ आ. व्याख्या २९

३ इ. अग्निहोत्रके प्रवर्तक ३०

३ ई. परमसद्गुरु श्रीगजानन महाराजजीकी शिक्षाका मूल्य ३१

३ उ. पंचसाधनमार्गमें प्रथम तत्त्व यज्ञ तथा अग्निहोत्र यज्ञका सर्वप्रथम रूप ३२

३ ऊ. महत्त्व ३ ए. लाभ ३२

३ ऐ. अग्निहोत्रका स्वरूप और प्रक्रिया ३७

३ ओ. हवन ३८

३ ओ १. हवनपात्र ३ ओ २. हवनद्रव्य ३८

३ ओ ३. विधि ४७

* अग्निहोत्र मंत्र ४९

* हवन करते समय प्रातः-सायंकाल निर्गुण स्तरपर प्रजापति व सगुण स्तरपर केवल प्रातःकाल सूर्यदेवता का व सायंकाल अग्निदेवताका स्मरण करनेका कारण ५१

* अग्निमें हवनद्रव्य छोडना ५१

* समयका महत्त्व * अग्निहोत्रकर्ता ५४

३ औ. अग्निहोत्ररूपी हवनसे उत्सर्जित तीन प्रकारकी तेजस्विता ५९

३ अं. परिणाम ३ क. अग्निहोत्र उपरांत करनेयोग्य कृत्य ५९

३ ख. विभूति ३ ग. अग्निहोत्र तथा दीपसे प्रार्थना ६२

३ घ. घर-घरमें अग्निहोत्र, यज्ञयाग तथा होम-हवनादि कर्म करना आवश्यक ६५

३ च. अग्निहोत्र कर्म साधनाके रूपमें करनेपर संबंधित विशिष्ट देवताओंके स्तरपर होनेवाले लाभ ६५

३ छ. अग्निहोत्र, होम, हवन, यज्ञ तथा याग ६९

४. वातावरण शुद्धिके संदर्भमें अग्निहोत्र, यज्ञ, व्यष्टि साधना तथा समष्टि साधनाका महत्त्व ७०

卐 भीषण आपत्तिमें प्राणरक्षा हेतु साधना करना अपरिहार्य ! ७३